कड़ी सं.– 48
आने वाला कल
फिर चलें...एकसाथ...

आलेख व अनुसंधान– डॉ. अनुराग शर्मा
संकल्पना और समन्वय : डॉ. बी.के. त्यागी

परिचयः–

सूत्रधार– नमस्कार, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस यानी एआई से कुछ और रोचक बातें लेकर हम फिर हाज़िर हैं। हम हमेशा एआई की संभावनाओं पर खूब बातें करतें है जैसे कि एआई ने ये हासिल कर लिया या ये बातें भी होती हैं कि एआई आधारित मशीनों या रोबोट्स ने ये हासिल कर लिया...पर क्या हम ये जानते हैं कि खुद हमारा देश आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के क्षेत्र में कितना आगे बढ़ चुका है, क्या हम जानते हैं कि दुनिया जिस एआई को पूरी मानवता सभ्यता का भविष्य मान रही है, उस टेक्नोलॉजी की ओर भारत ने अपने कदम किस तेजी से बढ़ दिए हैं? कुछ अचंभा, कुछ आशंका और बहुत सारी उम्मीदें...चलिए आज कुछ इन्हीं बातों को जानते समझते हैं हमारे धारावाहिक – *आने वाला कल* – की आज की कड़ी में– *फिर चलें...एकसाथ...*

पात्र

तीन दोस्त

प्रोफेसर संदीप	**–**	**करीब 50 वर्ष, आईटी के प्रोफेसर**
प्रशांत	**–**	**करीब 50 वर्ष, फौजी**
राकेश	**–**	**करीब 50 वर्ष, पत्रकार**

(कप प्लेट और हल्की आवाजें जैसे होटल में आती हैं। बीच में कोई वेटर चिल्लाता हुआ और कभी "जी सर" की आवाजें, बीच में बच्चों के शोर मचाने की आवाजें...)

राकेशः **परेशानी से–** यार प्रशांत ये संदीप भी कभी टाइम से नहीं पहुंचता है। इतने समय बाद आज अपने पुराने होटल में खाने का तय हुआ और ये...लगता है कि फिर से किसी को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर समझाने बैठ गया होगा...

प्रशांतः कोई नहीं राकेश, अब संदीप को सरकार ने ही एआई के प्रचार प्रसार की जिम्मेवारी दे रखी है और फिर इंजीनियरिंग कॉलेज में आजकल ऑनलाइन क्लासेज भी तो किसी भी टाइम होने लगी हैं, क्या पता किसी बच्चे ने कोई मशीन लर्निंग पर सवाल ही पूछ लिया हो?

राकेशः देख प्रशांत, तू बचपन से ही संदीप की बहुत साइड लेता रहा है, अब हम पचास साल के हो गए पर तू नहीं बदला, ठीक हैं संदीप इंजीनियरिंग कॉलेज में प्रोफेसर है और वो भी कंप्यूटर साइंस का, पर मैं भी अपना न्यूज चैनल छोड़कर आया हूं ना और तू..तू भी तो अब फौज में कर्नल है...ठीक है टाइम तो निकालना मुश्किल है... पर भाई दोस्तों के लिए तो निकालना ही पड़ता है...

प्रशांतः अरे राकेश तू तो बेकार ही...अरे लो आ गया लेट लतीफ...आओ...आओ...प्रोफेसर संदीप आओ...

संदीपः **हंसते हुए–** अरे वाह तो तुम दोनों टाइम से आ गए...सॉरी यार...ऐकेडमिक काउंसिल की मीटिंग से निकल ही नहीं पाया...ओहो...तो राकेश भाई अभी भी बचपन की तरह मुंह फुला ही लेते हैं...

– तेज हंसी –

राकेशः हां...हंस लो...एक तो देर से आओ और फिर सबसे पहले आने वाले पर हंसों...ये ही है नया ज़माना...चल गले मिल ले...

– फिर तेज हंसी –

संदीपः हां तो क्या ऑर्डर किया?

प्रशांतः तेरा इंतजार हो रहा था संदीप, हमने तो अभी बस चाय पी है...तू बता...

संदीपः यार प्रशांत, पता नहीं अब इतना परहेज करना पड़ता है कि होटल में क्या खाना है, ये सोचना पड़ता है...

राकेशः तुम दोनों की दिक्कत ही यही है कि ये हेल्दी और ये अन–हेल्दी...अब जिंदगी में किस–किस से बचोगे और कितना बचोगे...मौत का दिन तो तय ही है...

प्रशांतः क्या राकेश, आज के दिन मौत की बात...वैसे भी जब दोस्त साथ हों तो मौत से भी क्या डरना...तो संदीप क्या कहता है? वो ही मंगाएं?

संदीपः ठीक है प्रशांत, अब जब श्री श्री राकेश जी महाराज ने ज्ञान चक्षु खोल ही दिए हैं तो फिर वो ही ऑर्डर करो... ठीक है राकेश?

राकेशः और क्या संदीप...अब जो होगा, देखा जाएगा...और वैसे भी कौन–सा रोज़ रोज़ खा रहे हैं...तो मांगओ प्रशांत...

प्रशांतः **ऊंची आवाज में–** वेटर...

वेटरः जी साहब...

प्रशांतः तीन प्लेट देसी घी के पनीर वाले छोले–भटूरे और बाद में तीन प्लेट रसमलाई और फिर आखिर में कॉफी...

वेटरः जी साहब...

राकेशः और भाई मीठी चटनी अलग से ले आना...थोड़े अनार डाल के...

संदीपः अरे वाह राकेश, तुझे अभी तक याद है...

प्रशांतः क्यों नही याद होगा संदीप, तू तो छोले भटूरे खाता ही वहां था, जहां मीठी चटनी अनार के दानों के साथ मिले...अरे अभी इतनी भी उम्र नहीं बढ़ी की बचपन भूल जाएं...

– तीनों हंसते हैं –

प्रशांतः अच्छा संदीप तुम्हारे एआई वाले प्रोजेक्ट का क्या हाल है...कुछ जोर पकड़ा?

संदीपः क्यों नही प्रशांत, कुछ साल की बात है...देखना भारत भी एआई में बड़ी ताकत होगा...

राकेशः नहीं होगा...एआई में काम खूब होगा पर भारत ताकत नहीं होगा।

प्रशांतः क्यों भई? तुम्हे ऐसा क्यों लगता है राकेश?

राकेशः अरे प्रशांत कुछ हो तो दिखना भी तो चाहिए...अभी तो सब विदेशी ही नज़र आता है...और ये सोच, ये विचार, ये टेक्नोलॉजी ही विदेशी है...तो भारत कैसे दो–तीन साल में कोई तीर मार देगा?

संदीपः भई तुम पत्रकारों की ये ही दिक्कत है...बस क्रिटिसाइज़ करते रहो...एक तो एक्सक्लूसिव खबर देने के चक्कर में पूरी जानकारी ही नहीं इक्कट्ठा करते...बस सबसे तेज बने रहना है...

राकेशः वैसे मैंने फौज के लिए कुछ नहीं कहा है...पर तुम दोनों विज्ञान के हो तो मुझ पर ऐसे रोब नहीं जमा पाओगे... भईया उन लोगों ने अमिताभ की आवाज में अपने स्पीकर से बात करवानी भी शुरू कर दी है। मतलब कि हम प्रश्न पूछेंगे या कमांड देंगे और जवाब हमारे अमिताभ की आवाज में आएगा...और ये तो एक अमरिकी कंपनी ने किया...कहां हैं तुम्हारे भारत की एआई...और हां ये मत कहना कि जो भी हो अमिताभ तो भारत का ही है...

संदीपः **हंसते हुए –** वैसे राकेश तू कह तो ठीक रहा है, पर असल बात तो ये है कि एआई अगर किसी देश के लिए बेहद महत्वपूर्ण है तो वो भारत है...

प्रशांतः ठीक कहा संदीप, दुनियां की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था और विश्व की दूसरी सबसे अधिक आबादी वाले देश भारत में एआई के लिए सबसे अधिक संभावनाएं भी हैं और सबसे बड़ी बात देश में विश्वस्तरीय प्रौद्योगिकी संस्थान है जो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के प्रमुख केंद्र बनेंगे...और बनेंगे क्या, बनना शुरू भी हो गए...

राकेशः क्या यार प्रशांत...तुम दोनों तो ऐसे बता रहे हो कि अब तो जीवन ही एआई मय हो गया हो और देखो अहमदाबाद के एक होटल में रोबोट्स के द्वारा खाना ग्राहकों तक पहुंचाने देने को भारत में एआई तेजी से विकसित होना नहीं कह देते। और मैं शर्तिया कह सकता हूं कि पच्चतर या अस्सी परसेंट ये रोबोट विदेशी ही होगा...ज्यादा भी हो सकता है...

संदीपः भई प्रशांत ये अपना राकेश पत्रकार बनकर कुछ ज्यादा ही नेगेटिव नहीं हो गया? अरे भई मैं कहता हूं कि पच्चान्वें परसेंट विदेशी पार्ट्स हों पर अगर पांच परसेंट या साफ्टवेयर भी भारतीय है तो ये कोई छोटी बात नहीं है। दुनिया में एआई पर तीसरे चौथे नंबर पर एआई में निवेश भारत में हो रहा है...

प्रशांतः हां भई...कई भारतीय स्टार्ट–अप तो शिक्षा, स्वास्थ्य, वित्तीय सेवाओं और कृषि क्षेत्र सहित कई अन्य क्षेत्रों के लिए एआई आधारित समाधानों पर कार्य कर रहे हैं। अब इसी से समझों कि हैदराबाद में दी हेक्सआर्ट इंस्टिट्यूट ने हेक्सागन केपेबिलिटी सेंटर इंडिया शुरू किया है, ये केंद्र हर साल साढ़े तीन सौ से भी अधिक विद्यार्थियों को प्रति वर्ष एआई के विषय में ट्रेनिंग दे रहा है और अब ऐसे सैंकड़ों संस्थान आगे आ रहे हैं...

राकेशः देखो भई संदीप, मैं एक पत्रकार के तौर पर इतना जानता हूं कि एआई के क्षेत्र में किस राज्य में क्या क्या हो रहा है, जैसे तेलंगाना ने हाल ही में सागू–बागू योजना शुरू की गई है...

संदीपः सागू बागू योजना? अं...वो ही ना जो किसानों की आमदनी बढ़ाने के लिए खेती बाड़ी में एआई के उपयोग को बढ़ावा दे रही है? हैं ना?...

प्रशांतः हां हां संदीप वो ही...

राकेशः चलो तुम दोनों को सागू–बागू के बारे में पता तो है...अब देखो तेलंगाना सरकार ने ये किया पर प्रचार प्रसार तो हम पत्रकारों ने ही किया ना...और तुम हमें नेगेटिव कह रहे हो...भई हम सवाल तो पूछेंगे ही...हां तो मैं कह रहा था कि सागू–बागू में भी एआई आधारित प्रौद्यागिकियों को किसानों के लाभ के लिए उपयोग करना है...पर चाहे ड्रोन हो या फिर सिंचाई में एआई का उपयोग...टेक्नोलॉजी तो पूरी तरह हमारी नहीं है...

संदीपः **उत्तेजित होकर–** अरे तुम कहना क्या चाहते हो राकेश...कि भारत में एआई पर कोई काम नहीं हो रहा है। भारत सरकार ने दो हजार बीस में ही एआई, आईओटी, बिग डेटा, साइबर सिक्योरिटी, मशीन लर्निंग और रोबोटिक्स के लिए करीब छत्तीस सौ करोड़ रुपये दिए हैं...

प्रशांतः **शांति से–** देखो राकेश, संदीप बिल्कुल सही कह रहा है, अब तुम्हे तो पता ही है कि सरकार इंटरनेट तक सभी की पहुंच बनाने में लगी है, दुनियां में सबसे सस्ती इंटरनेट सेवाएं भारत में ही हैं...सरकार ई–गवरनेंस, ई–बैंकिंग, ई–शिक्षा और ई–स्वास्थ्य सेवाओं को प्रोत्साहन दे रही है...और इसमें सबसे अहम प्रौद्योगिकी के तौर पर उभरी है आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस...तुम तो पत्रकार हो तुम्हें तो पता ही होगा कि वित्त मंत्री ने खुद कहा है कि एक करोड़ युवाओं को भारत में ही उद्योगों के लिए प्रासंगिक प्रौद्योगिकियों के लिए एआई, बिग डेटा और रोबोटिक्स के लिए ट्रेनिंग दी जाएगी। अब सोचो एआई में प्रशिक्षित एक करोड़ युवा!!! कई देशों की तो आबादी भी इतनी नहीं है...

राकेशः अब तुम दोनों समझ ही नहीं रहे हो...मैं इन सब बातों को कहां नकार रहा हूं...मैं कह रहा हूं कि ऐसा क्यों है कि सब विदेशों में या कहूं पश्चिम के देशों में होता है और फिर हम विकासशील देश या उभरती अर्थव्यवस्थाएं उसे अपना लेती हैं और फिर हम किसी खास प्रौद्योगिकी में अव्वल होने का दंभ भरते हैं और तबतक दुनियां कोई और नई टेक्नोलॉजी ले आती है...मेरी शिकायत ये है।

संदीपः नहीं राकेश, ऐसा नहीं है, हो सकता है कि पहले कभी देश में अनुसंधान, शोध आदि का इकोसिस्टम ना रहा हो, परंतु अब वाकई में बहुत बदलाव हो रहे हैं और सबसे बड़ी बात है कि एआई को लोग प्रौद्योगिकियों का चरम बता रहें हैं, जो अपने में खुद ही सुधार करने में सक्षम होने के साथ इवोल्व होने की क्षमता भी रखती है... यानी आवश्यकता अनुसार किस कौन सी प्रौद्योगिकी अहम है, उसे खुद विकसित करने की क्षमता भी एआई में है...

राकेशः तो तुम ये कह रहे हो संदीप की एआई से ऊपर कुछ नहीं?

संदीपः नहीं राकेश मैं ऐसा तो नहीं कह रहा लेकिन आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, जेनेटिक इंजीनियरिंग और नैनोटेक्नोलॉजी के उपयोग से बहुत कुछ करना अब संभव है और आने वाले समय में भी बहुत संभावनाएं इन टेक्नोलॉजियों में नज़र आ रही है, और तीनों ही क्षेत्रों में आज भारत बहुत आगे है, खासतौर से एआई के क्षेत्र में भारत एक बड़ी क्रांति की ओर अग्रसर है...

प्रशांतः बिल्कुल सही कहा संदीप...चेहरे की पहचान, बायोमेट्रिक पहचान, अपराध जांच, यातायात और भीड़ प्रबंधन, महिला सुरक्षा, वन से बिना पर्यावरण को नुकसान पहुंचाय आय प्राप्त करना, नदियों की साफ–सफाई, बाघ सुरक्षा, कृषि, विद्यार्थियों की प्रगति पर नज़र, स्वास्थ्य जिसमें खासतौर से नई दवाओं की खोज और कई ऐसे और भी क्षेत्र है जिनमें एआई का उपयोग भारत में बढ़ना शुरू हो गया है या फिर सरकार का जोर अधिक है...

संदीपः प्रशांत तुम इसमें शेयर बाजार, वित्तीय सेवाएं, रक्षा क्षेत्र आदि भूल गए। वैसे मैं अपने पत्रकार मित्र को बता दूं कि रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन यानी डीआरडीओ ने सेंटर फॉर आर्टिफिशियन इंटेलिजेंस एंड रोबोटिक्स लैबोरेटरी की शुरूआत कर दी है, जिसमें एआई, रोबोटिक्स, कमांड एंड कंट्रोल, नेटवर्किंग, सूचना एवं संचार सुरक्षा आदि पर अनसंधान एवं विकास कार्य किया जा रहा है। इसका मुख्य उद्देश्य देश की सुरक्षा के साथ हमारे जवानों की सुरक्षा भी प्रौद्योगिकी के माध्यम से करना है और इसमें आशातीत सफलता मिल रही है...

राकेशः अच्छा तो तुम दोनों ये कहना चाहते हो कि अठ्ठारह मार्च दो हजार इक्कीस को जो भारत और अमरिका में एआई में नए अनुसंधान और विकास के लिए द्वीपक्षीय समझौता हुआ है, वो भारत के पक्ष में है और इससे भारत को फायदा होगा...वाह, तुम लोग भी खूब हो...अरे दिखता नहीं कि हमारे मेहनती और क्रिएटिव युवाओं का फायदा उठाकर ये विदेशी कुछ अपना नया विकसित कर लेंगे...

प्रशांतः **अब थोड़ा गुस्से से–** वैसे राकेश मुझे सच में हैरानी है कि आज के विज्ञान के चमत्कारी युग में...विज्ञान अनुसंधान को लेकर अभी भी हम राष्ट्र की सीमाओं में बंधे हुए हैं...विज्ञान किसी एक देश या किसी खास मानव जाति की बपौती नहीं है...सिमाओं, जात–पात, ऊंच नीच, स्त्री–पुरुष में बंधना ये विज्ञान की दिशा नहीं है...किसी भी पूर्वाग्रह से मुक्त होता है विज्ञान...अगर कोई वैज्ञानिक ये सोचे कि ये काम सिर्फ अपनी कौम के लिए ही करूंगा या सिर्फ अपने देश के लिए तो ये उसकी सोच में कमी दर्शाता है...विज्ञान में नही...ज्ञान–विज्ञान तो सबके लिए है और सभी का हक है...अब अगर तेलंगाना सरकार ने इंटेल इंडिया के साथ मिलकर इंटेल एआई केंद्र खोला है जो हैदराबाद स्थित एप्पलाइड एआई रिसर्च सेंटर है, जिसका उद्देश्य भारत में स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र की चुनौतियों का समाधान ढूंढना और स्मार्ट यातायात क्षेत्र में कार्य करना है। अब बताओ क्या ये सिर्फ एक देश तक सीमित रहेगा...भारत तो हमेशा की ऐसी प्रौद्योगिकियों पर काम करता रहा है जो भारत के साथ उन देशों के भी काम आएं जो गरीब हैं या प्रौद्योकिगियों पर अधिक शोध नहीं कर पा रहे हैं...

संदीपः देखा राकेश, तुमने हमेशा शांत रहने वाले प्रशांत को भी गुस्सा दिला ही दिया...देखो भई सोच बदलेगी तो सब बदलेगा और मुझे कई बार लगता है कि नई पीढ़ी की सोच सकारात्मक होना ज्यादा जरूरी है...अब देखो ना सरकारी स्कूलों के लिए रिस्पॉन्सिबल एआई फॉर यूथ एक राष्ट्रीय स्तर का कार्यक्रम है जिसका उद्देश्य युवा पीढ़ी को एआई के प्रति जागरुक करना और जो स्किल यानी कौशल का गैप उसे भरना है। अब इसका लाभ ये होगा कि स्कूलों में पढ़ने वाले हमारे बच्चे नए–युग की टेक्नोलॉजी की सोच से जुड़ सकेंगे और उनके प्रांसगिक कौशल विकसित हो सकेगा। मैं इसे बहुत बड़ा कदम मानता हूं...

राकेशः अब तुम्हे नाराज होना हो तो हो...पर एक तरफ हमें सब कुछ छिनने का डर सताता है और दूसरी तरफ हम ही अन्य देशों को अपने यहां बुलाकर सबकुछ सौंपते जा रहे हैं...

प्रशांतः यार राकेश, हाल ही में कारपोरेट कार्य मंत्रालय ने अपनी वेबसाइट कर संस्करण थ्री प्वाइंट जीरो यानी एमसीए इक्कीस लांच किया है, जिसमें एआई, बिग डेटा और मशीन लर्निंग जैसी प्रौद्योगिकियों का समावेश किया गया है, जिससे कंपनियों को अपनी फाइलिंग करने में सुविधा...अब इसका मकसद कारोबार करने में आसानी के साथ अनुपालन पर निगाह रखना है, अब इसी कारण देश में अधिक से अधिक विदेशी निवेश भी आ रहा है और इसी कारण भारत में मूलभूत सुविधाओं का भी तेजी से विकास हो रहा है...

राकेशः यार तुम लोग तो बिल्कुल सरकारी हो गए हो...भई मैं भी जानता हूं कि इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने नेस्कॉम के साथ मिमलकर जून दो हजार बीस ने एक पूर्णतः एआई को समर्पित पोर्टल लॉच किया है, जिसमें भारत में एआई–संबंधित सभी कार्यों, विकास और पहल के बारे में बताया गया है। अब ये पोर्टल भारत में एआई पर जो कुछ भी हो रहा है, उसके बारे में पूरी जानकारी देगा...पर कुछ फायदा...किसी को पता भी नहीं है...

प्रशांतः पता है तो...

राकेशः अच्छा किसे?

संदीप और प्रशांतः एक साथ– तुझे...

– दोनों की तेज हंसी –

राकेशः हसं लो...हंस लो...पर मैं सच कह रहा हूं कि लोगों को कुछ नहीं पता है...

संदीपः अरे राकेश, ये तो तुम पत्रकारों का काम है ना...

प्रशांतः क्या संदीप कैसी बात कह दी...पत्रकार होकर कोई पॉजीटिव काम कैसे कर दें? अगर कुछ अच्छा बता दिया तो फिर लोगों भला नहीं हो जाएगा...

– हंसी–

राकेशः बहुत हंस लिए तुम दोनों...अब हंसने की बारी मेरी है...

संदीपः क्यों भई तूने ऐसा क्या तीर मारा है जो तू हंसेगा...

राकेशः **हंसते हुए–** एक तो छोटे भटूरे आ रहे हैं और दूसरा मैंने ये सब बातें रिकॉर्ड कर ली हैं...

प्रशांतः छोले भटूरे आ रहे हैं, ये तो ठीक है...पर तूने हमें बिना बताए रिकॉर्ड किया ये गैरकानूनी है। पर तूने ऐसी हरकत की क्यों?

राकेशः असल में यार लोग पत्रकारों को बुद्धिजीवियों की क्षेणी में रखते हैं...वैसे हम होते भी हैं...अब किसी संस्थान ने मेरा लेक्चर रख दिया है...विषय है ''भारत में एआई के बढ़ते कदम''...अब ऐसे तो तुम लोग बताते नहीं...थोड़ी ईगो हर्ट की और तुमने एक अच्छी जानकारी तो दी ही दी... **– हंसता है–**

– प्लेट आदि की आवाजें –

वेटरः तीन प्लेट छोले भटूरे और ये अनार दाने के साथ मीठी चटनी...

संदीपः वाह, बहुत बढ़िया...

प्रशांतः राकेश तेरा इतनी जानकारी से काम चल जाएगा...

राकेशः अब तुम सच्चाई जान गए हो तो बाकी अब ईमानदारी से बता देना...वैसे...आाह...भटूरे गर्म हैं...ओह...छोले भी...

– हंसी–

संदीपः जैसे अभी राकेश तुझे छोले–भटूरे गर्म हैं ये पता चला बस ऐसे ही एआई में जब लोग और गहरे उतर रहे हैं, तो उसकी अनेक संभावनाएं सामने आ रही हैं...

राकेशः **खाते हुए–** जैसे?

संदीपः अरे भई, कमाल ये है कि एआई से जीवन का कोई भी पहलू अछूता नहीं है। अब जैसे तुम पत्रकार, लेखक ये ज्यादा अच्छी तरह समझ सकोगे...एक चीज़ होती है राइटर्स ब्लॉक?

प्रशांतः जैसे सोचने की शक्ति में एक रुकावट आ जाती है...हैं ना संदीप?

संदीपः हां प्रशांत...

प्रशांतः पर ये तो हर प्रोफेशन होता ही है...

संदीपः हां...असल में होता क्या है, जैसे किसी लेखक ने कोई कहानी का प्लॉट सोचा और फिर किसी कारण से वो आगे की कहानी सोच ही नहीं पा रहा है...

राकेशः हां संदीप, हम इसे दिमाग का अटकना कहते हैं...कोई भी भाव आने ही बंद हो जाते हैं...और कभी कभी कहानी के इतने प्लॉट दिमाग में आते हैं कि पूछो ही मत...पर जब मेंटल ब्लॉक या कहें राइटर्स ब्लॉक लगता है तो सब याद आता है बस आगे लिखना क्या है ये ही नहीं हो पाता...

प्रशांतः तो राकेश ये तेरे साथ होता रहता है...

राकेशः अरे प्रशांत...अभी पिछले हफ्ते पहले एक बच्चों की पत्रिका के लिए कहानी लिखने को कहा गया मुझे...मैंने कहानी शुरू तो की...पर आधी लिखने के बाद ऐसा ब्लॉक लगा कि बस...कुछ सोच ही नहीं पाया...

संदीपः तो बस राकेश...एआई आधारित एक ऐसा सॉफ्टवेयर बना लिया गया है जो किसी लेखक के बहुत काम का है... अगर कोई कहानी अधूरी छूट गई है...तो बाकी की कहानी ये एआई आधारित साफ्टवेयर पूरा कर देगा...

प्रशांतः हैं!!! यानी तुम सिर्फ कहानी का प्लॉट सोचो और एआई उस कहानी को आपके श्रोताओं को ध्यान में रखकर पूरा कर देता है...कमाल है...

राकेशः भई संदीप ये एआई आधारित सॉफ्टवेयर दिलवा दे...अच्छी कमाई हो जाएगी...

संदीपः अच्छा राकेश, अब एआई काम की नजर आने लगी...

– हंसी–

राकेशः पर यार ये तो और खतरे की बात है...

प्रशांतः अब क्या खतरा आ गया पत्रकार भाई...

राकेशः भईया...अब तो हम लेखकों की नौकरी भी गई...सभी कुछ तो ये एआई ही कर देगी तो भईया फिर लेखक तो भूखा ही मर जाएगा?

संदीपः बस फिर राकेश की नेगेटिविटी शुरू हो गई...ऐसा भी हो सकता है कि लेखक को सोचने के लिए और नई बातें मिल जाए...हमें अपने दायरे से बाहर सोचने का मौका मिले और किएटिविटी में ये ही तो चाहिए...कोई आउट ऑफ बॉक्स आइडिया ही मिल जाए...

राकेशः बस संदीप ये ही ऑउट ऑफ बॉक्स आइडिया ने तो लेखकों को बर्बाद कर दिया है...अब देखों ना इंटरनेट की स्पीड बढ़ी, तो ओटीटी प्लेटफार्म पर वेबसीरीज, फिल्में आदि कितनी आनी शुरू हो गईं...पर अब सभी को आउट ऑफ बैग आइडिया के चक्कर में पागल हो रहे हैं...अब ये आउट ऑफ बॉक्स आइडिया लाएं कहां से?

प्रशांतः तो बस राकेश ये ही तो...सोचो कितनी किताब पढ़ोगे...कितनी फिल्में देखोगे...कितने अखबार पढ़ोगे...अब एआई आधारित सॉफ्टवेयर के पास ये सब जानकारी तो है ही, तो जो जानकारी सभी के पास है वो उसके आगे ही सोचना शुरू करेगा ना...

संदीपः पर इस एआई आधारित सॉफ्टवेयर की एक और खासियत है कि वो आपके लिखने के अंदाज को समझकर कहानी को आपके तरीके से ही पूरा करेगा...

राकेशः हैं!!! ये कैसे संभव है?

संदीपः देख राकेश, मेरे छोटे–भटूरे तो हो गए खत्म...अब बाकी तो रसमलाई खाते हुए ही बताउंगा...

राकेशः अभी ले भाई...यार प्रशांत जल्दी खत्म कर???

प्रशांतः बस हो गया...

राकेशः वेटर...भई अब रसमलाई भी ले आओ...

वेटरः तीन प्लेट सर...

राकेशः हां भई...

प्रशांतः लो खत्म...वैसे तुम लोगों की बात सुनने के लिए नहीं, मैंने रसमलाई के लिए जल्दी भटूरा खत्म किया है...

– हंसी –

राकेशः लो भई अब रसमलाई भी आ गई...हां भई संदीप तो ये बताओ एआई मेरे विचारों को कैसे समझ लेगी और कहानी मेरी सोच के अनुरूप ही विकसित करेगी?

संदीपः अच्छा ये बताओ राकेश...तुम तो कई लेखकों के बीच भी रहते होगे...कई लेखकों ने अपने असिस्टेंट भी रखें होंगे न?

राकेशः हां संदीप...मुंबई में लगभग सभी बड़े लेखकों की टीम होती है...

संदीपः तो राकेश...कभी ये सोचा है कि कैसे जो फिल्म लेखक से असिस्टेंट होते हैं वो कैसे तय करते हैं कि सर को ये सीन पसंद आएगा या ये डायलॉग पसंद आएगा?

प्रशांतः वो तो संदीप, उन रायटर के साथ काम करके समझ ही जाते हैं...अब जैसे हमें पता होता है कि पिता जी को ये शर्ट पसंद आएगी या बहन को ये...वो सब साथ रहकर समझ आ ही जाता है कि व्यक्ति की पसंद–नापसंद क्या है...

संदीपः वाह प्रशांत, ये तुमने पसंद–नापसंद वाली बात बहुत अच्छी कही। असल में हम सभी अपने अनुभवों से ये सीखते हैं। अब कई बार बच्चे को देखकर ही बड़े अनुभवी लोग बता देते हैं कि इसमें एकाग्रता बहुत अच्छी है या ये बच्चा किसी क्रिएटिव क्षेत्र में जाएगा या इंजीनियर अच्छा बनेगा...

राकेशः हां संदीप, ऐसा तो बिल्कुल होता है और ये उनके अनुभव और उनकी ऑब्जरवेशन पॉवर कितनी है, इस कारण होता है...

संदीपः बिल्कुल सही, राकेश...तुमने सही कहा कि ऑब्जरवेशन पॉवर...पर से अवलोकल करने, देखने समझने की शक्ति आती कहां से है...

राकेशः अं...इसमें हमारी परवरिश...अं...हमारी शिक्षा...या हमारी मेमोरी की अहम भूमिका होती है...

प्रशांतः हां संदीप, राकेश ने सही कहा...ये ही सब कारण होते हैं जो हमारी देखने समझने की शक्ति को विकसित करते हैं...

संदीपः तुम दोनों ने ही बिल्कुल ठीक कहा...लेकिन देखो इसमें सबसे अहम है हमारी मेमोरी...याददाश्त यानी स्मरणशक्ति...ये मेमोरी ही हमें हम बनाती है...यानी मुझे मैं बनाती है...

राकेशः यार प्रशांत ये प्रोफेसर संदीप हमारा यार अभी से कुछ सठिया गया लगता है...हमें हम बनाती है...मुझे मैं बनाती है...भई तेरी नाक, तेरी आंख...बल्कि तेरा पूरा चेहरा तुझे तू बनाता है...समझा...

– हंसी –

संदीपः **हल्की हंसी के साथ –** वैसे ये बातें समझना इतना मुश्किल भी नहीं है...असल में हम जो भी हैं वो हमारी मेमोरी है यानी जो कुछ भी हमने देखा, सुना या समझा है सब हमारे दिमाग में है...अब एआई इसी दिमाग को बनाकर इन मेमोरीज़ को पकड़ने में सक्षम हो रहा है...मतलब पहले आर्टिफिशियल न्यूरल नेटवर्क यानी एक प्रकार का कृत्रिम दिमाग तैयार करेगा...फिर उसमें मेमोरीज़ भरेगा और फिर हमारी तरह सोचने समझने में सक्षम हो जाएगा...

राकेशः **मेरे** भाई संदीप, तो तू ये कहना चाह रहा है कि एक तो कृत्रिम दिमाग बनेगा और उसमें हमारी तरह यादें, स्मरणशक्ति होगी...भईया इस दुनियां में सात सौ करोड़ से भी ऊपर लोग हैं...तो इतने लोगों का दिमाग कैसे तैयार होगा? बताओ?

प्रशांतः क्या यार राकेश, ये भी कोई सवाल हुआ। अब किसी कपड़ों के ही शोरूम में जाओ...तीन–चार साइज में ही सभी समा जाते हैं...हां कुछ अपवाद होते हैं...

संदीपः बिल्कुल ठीक कहा प्रशांत अब यही हाल जूतों का है...चार–पांच साइज में अधिकतर लोगों के पैर समा ही जाते हैं...

राकेशः अरे तुम दोनों क्या कपड़े–जूतों की बात करने लगे...भई आकार तो ऊपर नीचे होते ही हैं...पर दिमाग क्या चार–पांच या आठ–दस प्रकार में ही बांटा जा सकता है?

संदीपः हां...क्यों नहीं...पता है अगर दुनिया में कुल कितने प्रकार या कहें टाइप के लोग हैं?

राकेशः क्या लोगों के भी टाइप होते हैं!!!

प्रशांतः हां, क्यों नहीं? वैसे पर्सनल्टी के आधार पर लोगों को आठ प्रकार में बांटा गया है...वैसे कुछ विशेषज्ञ कहते हैं कि व्यक्तित्व के आधार पर दस प्रकार के मानव होते हैं...

राकेशः तो प्रशांत तुम्हें लगता है कि इन्ही आठ या दस प्रकार में पूरी मानवता सिमट गई है और उसी पर निर्भर होकर तुम सटीक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित प्रणाली तैयार कर पाओगे?

संदीपः अब ये तुमने कुछ पत्रकारों वाली बात की...असल में ये पर्सनल्टी वगैरह सब ठीक है, मशीन को पढ़ाया लिखाया भी जा सकता है...पर अगर हम चाहते हैं तो हमें एक दिमाग बनाना होगा...बिल्कुल मानव की तरह...

राकेशः और ये दिमाग कैसे बनेगा?

प्रशांतः बस अब ये ही तो आर्टिफिशियल न्यूरल नेटवर्क है...कहते हैं कि हमारे दिमाग में करीब सौ अरब न्यूरॉन हैं...

संदीपः वैसे एक बात बताता चलूं...कहते हैं कि सौ अरब तारे हमारी आकाशगंगा में भी हैं...

राकेशः तो भाई संदीप...ये आकाशगंगा और दिमाग का क्या कनेक्शन है?

संदीपः अब ये ही तो बात है...सौ अरब तारे और सौ अरब न्यूरॉन्स...क्या पता एआई तारों की सैर की करवा दे या क्या पता तारों से बातें?

राकेशः अब तुम तो विज्ञान कथाओं की दुनियां में घुस गए...भई प्रशांत तुम आर्टिफिशियल न्यूरल नेटवर्क के बारे में बता रहे थे ना...

प्रशांतः हां तो राकेश ये न्यूरल नेटवर्क, डाटा और उन्हें समझने वाले एल्गोरिथ्म्स पर निर्भर करता है...डेटा एनालिसेस बस ये सब मिलकर एक आर्टिफिशियल न्यूरल नेटवर्क बनाते हैं और सौ करोड़ की बात ये थी कि अगर सौ करोड़ लोगों का डाटा मिल जाए तो एक कृत्रिम दिमाग तैयार हो जाएगा...

संदीपः और अब तो सोचने समझने में मशीने सक्षम होने लगी हैं...एआई में संभावनाएं असीमित हैं...भारत अभी अपनी तमाम समस्याओं का समाधान ढूंढने में एआई में संभावनाएं तलाश रहा है और इसमें काफी सफलता भी मिल रही है...

राकेशः तो तुम दोनों के हिसाब से भारत का भविष्य भी बाकी दुनिया की तरह एआई से ही बंधा है...

प्रशांतः बंधा तो मानवता से है...पर हां अगर दुनिया एआई में कुछ भी कर रही है तो भारत भी सबसे पहली पंक्ति में खड़ा है...अरे तुम देखना आने वाले समय में छोटे छोटे बच्चे भी कोडिंग करेंगे...एल्गोरिथ्म्स तैयार करेंगे...और...

संदीपः और राकेश तुम जैसे पत्रकारों के सवालों पर भी तब विराम लग जाएगा...पर एक बात कहूं राकेश...

राकेशः बोलो बोलो...अब इतना बोल रहे हो तो ये बात भी बोल दो...मन में कुछ मत रखना...

संदीपः मैं बस यही कहना चाहूंगा कि एआई ने मुझ जैसे बोरिंग प्रोफेसर में भी नई जान फूंक दी है...अब देश के युवा देखने इस प्रौद्योगिकी के साथ देश को किस शिखर पर पहुंचा देंगे...पर इस सब के बीच तुम जैसे पत्रकारों की

भूमिका सबसे अहम है...तुम लोग एक अनजाने विषय को जानने समझने के लिए कितना पढ़ते हो, कितनी मेहनत करते हो...अपने काम में बिना किसी झिझक के ऐसे ही लगे रहना...ऐसे ही सवाल पूछते रहना...ये सवाल ही मानव के विकास की नई उड़ान की नींव रखेंगे...

राकेशः अरे संदीप...तूने तो सैंटी कर दिया...देखों भई मेरा लेक्चर तैयार हो गया...और मैं आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में भारत की भूमिका काफी समझ गया हूं...कुछ बातें अभी भी मन में हैं, पर वो तुम दोनों से फिर कभी पूछ लूंगा और संदीप ये मेरा वादा है कि मैं अपने सवाल बेझिझक, बेधड़क और बेखटखे से पूछता रहूंगा...अं...अब तुम दोनों से एक सवाल पूंछूं...

प्रशांतः अरे राकेश अब सवाल पूछने के लिए भी सवाल करना पड़ेगा...पूछ जो पूछना है...

राकेशः तो भइयों छोले–भटूरे भी हो गए, रसमलाई भी खा ली...अब पेट काफी भर गया है...तो मेरा सवाल ये है कि अभी भी तुम दोनों को कॉफी पीनी है या चलें?

– तेज हंसी –

संदीपः वैसे तेरे सवाल कैसे भी रहें...ये सवाल सबसे प्रासंगिक है...भई मुझे लगता है पेट काफी भर गया है...लेकिन भाइयों कॉफी तो पीनी ही पड़ेगी...हां थोड़ा टहल सकते हैं...

प्रशांतः भई मेरी एक राय है...जब अठ्ठारह–उन्नीस साल की उम्र में ये सब खा लिया था, तो अब तो सब खा कर ही उठेंगे...–**चिल्लाकर–** वेटर...तीन कॉफी...

वेटरः जी सर...

राकेशः अरे संदीप ये प्रशांत तो फौजी है...पर हमारी तो मुसीबत हो जाएगी...

संदीपः कोई नहीं राकेश...अब दोस्ती की है तो निभानी तो पड़ेगी...

– तीनों ऊंची आवाज में हंसते हैं –

समाप्त

सूत्रधार– तो सुना आपने हम आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस यानी एआई को कितना सीमित करके सोच रहे थे, जबकि इसकी संभावनाएं तो आपार हैं। अब भारत ने तो एआई के क्षेत्र में कदम बढ़ा दिए हैं और पूरा देश मिलकर एक नई मंजिल की ओर बढ़ चला है। देश में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के लिए निवेश भी बढ़ा है और सरकारी व निजी प्रयासों से कौशल भी बढ़ रहा है। अरे अब नया युग आ चुका है, सभी में एक नया जोश है...टेक्नोलॉजी की दुनिया से ते हम सभी जुड़े ही हुए हैं, बस अब एआई से भी ऐसे ही जुड़ने की आवश्यकता है। पर मैं भी क्या कह रहा हूं...जुड़ने की आवश्यकता क्या...अब तो हम जुड़ ही चुके हैं। तो एआई से जुड़े मुद्दे और संभावनाओं को जानने समझने के लिए बस ऐसे ही सुनते रहिए *आने वाला कल*...अगली कड़ी में फिर कुछ नई और रोचक जानकारियों के साथ आपसे फिर मिलते हैं, तब तक के लिए नमस्कार...

– समाप्त –